|  |  |  |  |
| --- | --- | --- | --- |
| 12. Oktober 2025 | | | |
| **28. Sonntag im Jahreskreis C** | | | |
| Erste Lesung: 2 Kön 5,14-17; Zweite Lesung: 2 Tim 2,8-13; Evangelium: Lk 17,11-19 | | | |
|  |  | |  |
| Eröffnung: | GL 427, 1+2! | | Herr, deine Güt ist unbegrenzt |
|  | GL 409 | | Singt dem Herrn ein neues Lied |
|  | GL 393, 1-3 | | Nun lobet Gott im hohen Thron |
|  | GL 711 | | Aus den Dörfern und aus Städten |
|  | GL 143, 1+2! | | Mein ganzes Herz |
|  | GL 272, 1+3 | | Zeige uns, Herrm deine Allmacht |
|  |  | |  |
| Kyrie: | GL 157 | | Herr, erbarme dich |
|  |  | |  |
| Gloria: | GL 701 | | Lasst uns Gott |
|  |  | |  |
| Antwortgesang: | Psalm 98, 1-4 | |  |
|  | Kehrvers: | |  |
|  | GL 55, 1 | | Jubelt, ihr Lande, dem Herrn |
|  | oder Psalmlied | |  |
|  | GL 551, 1+2 | | Nun singt ein neues Lied |
|  |  | | |
| Halleluja-Ruf: | GL 174, 6 |  | |
|  | Vers: |  | |
|  | *Dankt für alles;* | | |
|  | *denn das will Gott von euch, die ihr Christus Jesus gehört.* | | |
|  |  | | |
| Credo: | GL 802 | Den Taufbund wir erneuern | |
|  |  |  | |
| Gabenbereitung: | GL 360, 1+2! | Macht weit die Pforten | |
|  | GL 702 | Herr, was im Alten Bunde | |
|  |  |  | |
| Sanctus: | GL 703 | Heilig | |
|  |  |  | |
| Agnus Dei: | GL 800 | Herr, gib uns deinen Frieden | |
|  |  |  | |
| Danksagung: | GL 389, 1+2+5+6 | Dass du mich einstimmen lässt | |
|  | GL 382, 1+2+4 | Ein Danklied sei dem Herrn | |
|  | GL 405, 1-3 | Nun danket alle Gott | |
|  | GL 409, 1+3+4 | Singt dem Herrn ein neues Lied | |
|  | GL 712 | Singt dem Herrn alle Völker der Erde | |
|  |  |  | |
| Schluss: | Marienlied |  | |